

ASHA ARCHIVES

आशा भोंसले

1.438

ASHA ARCHIVES

महाराष्ट्र

१९४३

१९४३

१९४३

२

महाकालिबुद्ध धर्म शीमबुद्ध कालानाह्यपद्मसूत्रे विनाशियु। लम्बी गिनै कथक रूपार्थ लज्ज
कर्त्ता रीति धर्मनी ॥ महाकाप्रयासोत् ॥

धर्म

कालियासूत्र ॥ पलथजलदवर्धुं धालद्वीपित्ता नवनि नकुमाली बडरुद्धे जेहासी
। कलु रूपा नवासां कातिकी पतवूर्त्ता मन्नातस्सी रडकाली कालगयी लज्ज ॥ ॥

१ तार्थसाधनी ॥ विष्णुनाय मनी ॥ न्यास ॥ नतः स्वर्ग विष्णो वृक्ष वज्रवसुमधुलीविलि
थी ॥ सोमा न्याधीदकनोसू क चउचसि ॥ पूष्युनिलायनमः ॥ उडुशानायनमः ॥ जं
जालधनायनमः ॥ कां कामनूपायनमः ॥ ॐ सुसुखादिकर्मनयूय ॥ जं आधननया
दिशीनमः ॥ नमः ॐ निमर्तु नायकाय आधनयूय ॥ दलकलायूय ॥ यधुसालायेया
इकी ॥ नंडुभाकलाये ॥ लघानिन्यक ॥ ब्रह्मालिन्यक ॥ लेविस् लिन्यक ॥ वंसूत्रिक
॥ सस्वदूयाक ॥ हंकपिलाक ॥ हंशवाहिन्यक ॥ कंकशवाहिन्यकलाये ॥ नंज

प्रिमलुलायदलधर्मकलात्मन्ये ॥ ॐ तिसीयूय ॥ रुट ॐ निमर्तु नायका लितीद्यटं ध
नावायविष्णुय ॥ सोनकलायूय ॥ कस्तनयन्यकलायेयाइकी ॥ खवंतापिस्थक ॥ लं हं धू
आक ॥ धंयंमविष्णुय ॥ ॐ नं बालिन्यक ॥ वंधुनूयक ॥ रुट दसूरूनाक ॥ जं धं आग
दाक ॥ जगविष्णुय ॥ ॐ धं नूयक ॥ रुट धं विलीक ॥ ॐ उ कमाक ॥ वंसूत्रिमनु
लायदादलकलात्मननमः ॥ ॐ निपात्रयूय ॥ मूर्त्तिमाहवाचि ० त ॥ घटहि ननुव
नी ० नयावपूवयिता ॥ उडुशानायनमः ॥ रुटी नलायनसमावह ॥ आधुनितनमः ॥

यात्वीयवैवाङ्मानय ॥ मानकलापूय ॥ अं अमृताकलापेयाद्रुको ॥ अं मानवाकलापे
२ ॥ अं पूषाक ॥ अं उष्टिक ॥ अं पुष्टिक ॥ अं नतिक ॥ अं धृतिक ॥ अं ललितिक ॥
ॐ चलिचक ॥ ॐ कात्यक ॥ अं योसाक ॥ अं विर्वक ॥ अं पीत्यक ॥ अं अर्नगदाक
॥ अं पूषाक ॥ अं ४ पूषुमाकलापे २ ॥ संसासमनुलायवातलकलात्यन २ ॥ यवमूडा
हिस्रयवमीत् ॥ डोनम ४ ॥ वडवमुमूडा ॥ डीनम ४ ॥ मह्यमूडा ॥ कौनम ४ ॥ मूष्टिमू
डा ॥ वूनम ४ ॥ गभूवमूडा ॥ स४नम ४ ॥ योनिमूडा ॥ मनुलायनम ४ ॥ वलिदत्ता ॥ अन

म४सर्वयधिकदवस्था नम४ ॥ ववलि सर्वयधिकदवस्था नम४ ॥ मूलनजयन ॥ ननश
सूधूयितकृत्वा ॥ रुट ॥ कसेनडयनाठन ॥ अं अवमुष्टन ॥ मूलनजयन ॥ नम४ सिचन
॥ मूलनविवात् नसिकन घानयन ॥ अं कृष्णयुष्टिकियत् ॥ ननम४ ॥ अं ४ लिखन
॥ हंकोहसी ४ ॥ पूय ॥ २ ॥ अवामद वीयवोवट वामदवाय नम४ ॥ २ ॥ अयसूयतयुं
म्रायदू रुटयलुयतय नम४ ॥ २ ॥ अं दीक्षीयवेमस्वामिनिषवमाकावचन्द्रमूयानि
रुदिनिषाजैविसविसस्वाहा ॥ १० ॥ राजय ॥ अं ३ दीक्षीयानन्दव गायविमह सुध

दशै धीग्रहि तन्ना धर्मावीत्यन्यथा दयात् ॥ जय ३ ॥ ॥ उं हं स ४ सू विष दसूत त विक
स्रमा गाव दिष दतिथि र्ना नाना नृष दव स द त स्रमा म स व का ॥ ग ॥ जा न जा ॥ अ ॥ डि ॥ जा
अ नं वृ ह त ॥ जय ३ ॥ वां वां वू वं वां वं ४ व म आय मा वि ना ये सू धा द ये न म ४ ॥ जय १० ॥ ॥ जां
ऊं ऊं ऊं ऊं ४ सु द्वा द्वा सु सा र्य मा च य अ मृ तं अ व य २ स्वा हा ॥ जय १० ॥ ॥ नं नं तूं तूं तूं
ग ४ वृ क आय मा वि ना ये सू धा द ये न म ४ ॥ जय १० ॥ ॥ उ क म व य नं व म सु ल सु व म य ध
वी क वा रु वा व रु ह ली त न न ना स या म्य ह ॥ ॥ सूर्य म उ ल स रू री व वू ल त य सी हि ती ॥

जु ना वी ज म य द वि ॥ उ क सा पा न वि मा य नां ॥ ॥ द वा नं पि न वा वी र्जं ॥ उ म र्ज नं द म र्यं य दि त
न स र्ज न नं द वि रु क आय वि मृ द्य त ॥ ३ ॥ ॥ ऊं वां वां वां वां ४ विका का व ति सा ति नि वि क
ना त ल ड य स्य ह न २ स्वा हा ॥ जय ३ ॥ ॥ ऊं वां वां अ मृ त अ मृ त ॥ रु व अ मृ त व वि नि मा हा य
का स यू क स्वा हा ॥ जय ३ ॥ ॥ ॥ ॥ न ॥ नी लं रु र्यं स म धि वृ क यू न ४ य या नि नी लां सू का र व न म
त्य वि ल य ना वा ति डाय न उ व ना नि ति वा द ध नां व म य धा र ग ति य वि या रु ह क न ॥
ध म न ॥ ॥ ऊं वां वां नि व रु वि नी स क ल न न वा वि दि नि स क ल य सू वा न ४ म नू ४ य क य

ली। अस्त्रादलकुजयव पंचवकुंजिलाचनी। अमृता नवमधसू। उन्नपथायविहिती।
 वृषादूरीतीलकण्ठ। सर्वाश्चललूविनी। कयालषदा मीधनी। चंठाउवनूवादिनी। या
 साकूलधनीदवी। गदामूसवधानिनी। वमीरुठकवहीस। पनसूमूमीनसूलिनी। विज
 गैरुठकैमून्ये। वनदासयपानिनी। लाहिनीदवदवर्ष। सावयंहेववीयूनी। कंहेआ
 नन्दसेववायवषठआनन्दसेववायनम॥२॥ ॥ सावयंवसूनादवी। वन्दकाशयू
 नउहो। हिमकून्येधवनी। यनेवकुंजिलाचनी। अस्त्रादलकुजयूक। सर्वा नन्दक



ASHA ARCHIVES

8677

SHRI 8677

ASHA ARCHIVES

लहृवाहिनीक०॥कंकवाहिनीक०॥वंजुग्रिमलुलायदलकलात्मननमः॥॥अरु
 मर्ललयकाल्य॥अरु१नमस्तुतजूनकलकिविगुलितिल्लहंसहायापुपुष्पायकुकुंकुरु
 दुस्वाहाअरुकायरु॥अलनयकेमृतजूलिस्तानकृत्वा॥गवीवनादिवकुसुमसुमन
 लययन्त॥अधानववर्जलधूययन्त॥पाजाल्यकवसेसमालिशवक्रापविष्णुय॥सूर्यकला
 ॥अकसेनपिनीकलायनमः॥खंवतापिनीक॥गरुधूआकला॥घंयमनीचिक॥ठ
 नहालिनीक॥वंधवूचिवाक॥छंदसूयूनाकलाय२॥अथंशागवाक॥संगविष्वा

नयार्जुन दक्ष हस्त विवाजिनी रूढ कां कुलघल्लव कयात् खद्या मक न्चुकी । नीलात्यवास्त
मं विन्दु वाम हस्त विष्णु विनी । मलि बल कृताभाय सर्वो लंकात् हविना । दिशय आसमा
दवि दिशमानन्द नूपिनी । सर्व सिद्धि कवीदवि सर्व मङ्गलदायनी । सर्व लान्तिक वीदविल
म्भीक्षा साध सिद्धि दो । सर्व धाम वदवाती इत्युत्तराय वसामृती । उर्व धाम मल्लदवि वा नूति
दिश नूपिनी ॥ ध्यान पूर्य नमः ॥ अथान वज्र वनीति प्रय हकाल सकाल ॥ ॐ वां यै यै यै
ललाटय कनीय पूनी सानन्द देव धायू ॥ वां वां वृं यै धी वा नूती दवि पाउ सदा वका ॥

यथायू॥ ज हं हं आनन्द ल कि रो न वानन्द वी वाधियतय महाविद्या वाज त्ववी सं ह वायू॥
ज अं अं ॥ १४ क र वं २४ अं अं का क स य ना नि स हा न का य वायू॥ ज हं सिद्धाय पाद
द य वायू॥ हं म वाय ॥ ३॥ ज नू द य २॥ हि वि दू ता य ३ नू द य वायू॥ हं ले की ये गु ध
वायू॥ हं दी फा ये ना ली ॥ ४॥ वायू॥ हं मा लि नी द द य वायू॥ हं लि वा ये फ ॥ ५॥ वायू॥ हं व
सू मू र्वा ये मू र्वा वायू॥ हं १॥ ना सा मू मा ये ना सा यू ६ द य वायू॥ हं क ट का ये क र्मु द य वा
यू॥ हं ह वि का ल्ये श क पायू॥ हं ४ मू र्वा न नि न स वायू॥ १२॥ हं स र्व हू ता ये द द य वा

यू॥ हं अ मृ त न ज मा लि नि ह कि नि व स स्वा हा॥ हं नि व द वा ध नी जू ना दि वा ध नी नि र्व
ये व व टा॥ हं व जि ता व ज ध ना य स म न्न क व वा य हं ॥ हं नि त्वा वा ध नू क ल कि स ह सु
न ज नि त न र ज य वा य व टा॥ ज हं ४ न म हं मु अ न न ल कि सि लू लि ति हं हं म हा या गु य म्वा य
हं २ हं हं हं हं ॥ ४॥ ज अं व ज कि नी दे वा वायू॥ ज अ न न ली क र्मा ग न पु ग मि नी अ न
न ली क ज मृ त र्वा वि ति नू अ न नानन्द द व अ न नान्वा अ न न क टि सि धि अ न न
ल द थानि नी पायू॥ ज हं हं स र्व श्री महा पात्र स हा व का य वायू॥ ज स र्व हं हं श्री महा

यन्तु ह दानकायपाय ॥ वलि ॥ अवायु विरयलु मूडी ॥ जय ॥ सैरखाहा ॥ १० ॥ श्रीज
 ॥ सुवा सुवम भात्यन्त कोवाये खातनवपुन । नजात्यनो महाधवि दिश कन्यामना वम ।
 कर्मल ॥ सिद्धि देव व क्रिया सिद्धि समनु विन । सैरवागम हाविश्या पायवित्यादि ॥
 धनी महासिद्धि करनित्य महावाधि नूहाय हे । उर्व सिद्धि करन वि पाय पूजा महारु
 ली ॥ अगन्धदि ॥ वलि विरुग ॥ ०० नियाज साधन विधि ॥ ॥
 महाकाल पूजा ॥ या अयाम ॥ न्यास ॥ हुं हुं अमुक य रुट् ॥ हुं हुं अमुक य रुट् ॥ हुं हुं अमुक य रुट् ॥ हुं हुं अमुक य रुट् ॥

लतर्जनीत्या ॥ यमी दयसी दमधमत्या ॥ डी डी अनामिकोत्या ॥ स्वास्तक निष्कात्या ॥
 ॥ हुं हुं कनतन वृष्टाया ॥ उर्वद दयादि ॥ ॥ अमनयूय ॥ यता सनायनम ॥ ध्यान ॥ डेम्
 अनलु महाबुडा महाकालादिगवन ॥ कपाल कलु कावाम धूल खदाम ददि ॥ उ
 जमीरु विना गपि । रसास्ति मलिमलु न ॥ कालसावक मधसु । रमेल ग्याय वस्तिता
 । दियवी तननी ननु कालिका ददयाय वि । यथेखाशके वायी यतीती कलापनीयमी । उर्व
 लयाय जदवी सर्व सिद्धि पूजायती ॥ ध्यान ॥ जय ॥ हुं हुं महाकाल यमी द ॥ डी डी स्वाहा ॥ ॥

॥ यममूय ॥

ददयादि